डा० विभूति भूषण, व्याख्यान-19 (चन्द्रगुप्त-I व्याख्यान 18 का शेष) (4)

किया। स्थिति जो भी हो लेकिन इतना स्पष्ट है कि महाराज गुप्त/श्रीगुप्त और घटोत्कच एक साधारण शासक थे, जो सम्भवतः मगध के आस-पास के क्षेत्रों में शासन करते थे ये दोनों राजा ने मिलकर लगभग 319-20 ई० तक शासन किया। घटोत्कच के पश्चात इसका पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश का शासक बना।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-350ई०) गुप्त राजवंश का पहला शासक था जो अपने आप को अपने पूर्वजों के विपरित 'महाराजाधिराज' की उपाधि से नवाजा। इसी के ~~समय~~ कार्यकाल से गुप्त साम्राज्य एक सम्मानित साम्राज्य के रूप में स्थापित किया। इसी कारण गुप्त साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक चन्द्रगुप्त प्रथम को माना जाता है। गुप्त ~~साम्राज्य~~ वंश अपने साम्राज्य वृद्धि के लिए वैवाहित संबंध को भी एक प्रमुख स्थान देता है, इनकी शुरुआत चन्द्रगुप्त प्रथम से होती है जब वह लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी के स्थान विवाह संबंध स्थापित किया। कहा जाता है कि इसी विवाह के फल स्वरूप चन्द्रगुप्त प्रथम को लिच्छवी के वैशाली वाला भाग दहेज के रूप में इसे मिला था। इस विवाह का पुष्टि दो प्रमाणों से होती है। पहला एक सोने का सिक्का मिला है जिसके अग्र भाग पर चन्द्रगुप्त और कुमारदेवी की आकृति नाम के साथ अंकित है और पृष्ठ भाग पर सिंहवाहिनी देवी की आकृति के नीचे 'लिच्छवयः' अंकित है

जिसे ~~जिसे~~ चन्द्रगुप्त - कुमारदेवी प्रकार / राजा-रानी प्रकार / विवाह प्रकार / लिच्छवी प्रकार का सिक्का कहा गया है इसी प्रकार के एक चाँदी का सिक्का भी प्राप्त हुआ है ऐसा लगता है कि ये चाँदी का सिक्का भी चन्द्रगुप्त-I का ही है अर्थात चाँदी के सिक्कों का प्रचलन चन्द्रगुप्त-I के काल से ही प्रारम्भ हो चुका था / दूसरा प्रमाण प्रशस्ति में समुद्रगुप्त को लिच्छवी दौहित्र (लिच्छवी की कन्या से उत्पन्न पुत्र) कहा गया है इस प्रकार चन्द्रगुप्त-I के वैवाहिक संबंध द्वारा लिच्छवी के वैशाली वाला भाग पर अधिकार के साथ-साथ एक राजनीतिक प्रतिष्ठा एवं सहयोग भी मिला / इस वैवाहिक संबंध के बाद द्वितीय मगध साम्राज्य की स्थापना 'महाराजाधिराज' की उपाधि ग्रहण की होगी और इसी विवाह के उपलक्ष्य में उन्होंने राजा-रानी प्रकार के सिक्कों का प्रचलन करवाया होगा।

लिच्छवी राज्य आर्थिक रूप से सम्पन्न था क्योंकि वहाँ रत्नों की खान थी इसकी पुष्टि बुद्धघोष की टीका - 'सुमंगलविलासिनी' से भी होता है, इसमें कहा गया है कि पाँचवी शताब्दी ईसा पूर्व में मगध नरेश अजातशत्रु का लिच्छवियों के साथ संघर्ष रत्नों की खान पर

व्याख्यान जारी / continue

Scanned with CamScanner